तुलसीदास की विनयपत्रिका

पवन कुमारी
एसि्सटैन्ट प्रो० हिंदी विभाग

- ***तुलसीदास जन-जीवन के कवि है।उनका रामचरितमानस जहाँ जनजीवन का काव्य है वही विनयपत्रिका ज्ञान ,भक्ति व काव्य कला का संगम है।***

विनयपत्रिका की रचना स० 1636 के लगभग मानी जाती है। यह एक गीति काव्य है।

डा०भागीरथ मिश्र –'' तुलसीदास जी ने विनयपत्रिका में शुद्ध गीति काव्य का उत्कृष्ट नमूना रखा है''

विनयपत्रिका की प्रमुख विशिष्टताएं

प्रबंधात्मकता:- डा० सक्सेना :- ‘‘विनयपत्रिका मुक्तक काव्य की कोटि में आता है’’

- भक्ति भावना:-

  ‘‘कैसे देहुँ नाथहि खोरि
  कामलोलुप भ्रमत मन नितप्रति परिहरि तोरि’’

दार्शनिकता:

कोउ कह सत्य,झूठ कह कोऊ,जुगल प्रबल करि मानै
तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम,सो आपुत पहिचानै''

विनयपत्रिका के कुछ व्याख्या पद

श्री रामचंद्र कृपाल भजु.....पद कंजारुणं

तुलसीदास जी श्री राम की प्रंशसा करते हुए कहते हैं कि हे मेर मन, श्री राम का भजन करो।क्योंकि वह आपके मन को कठोर संसारिक दुखों से मुक्त करके सुख प्रदान करते है।श्री राम जी के नेत्र कमल के समान, मुख कमल के समान, हाथ कमल के समान एवं चरण भी लाल कमल के समान सुंदर है।

-

मेरो भलो कियो.....कौन खोटो

- तुलसी जी कहते है कि राम जी ने अपने भलेपन मे ही मेरी भलाई कर दी है भाव वह अपने सेवको के रक्षक है।ओर अन्य साई विद्रोही स्वभाव के हो सकते है परतु राम जी अपने सेवकों का सदैव हित करने वाले है।राम के जैसा बडा इस संसार मे अन्य कोई नही है और मेरे समान कोई खोटा नही है।

तुलसी दास की विनयपत्रिका की कुछ अन्य विशेषताएं

लोग कहे.....मन भावो

तुलसी कहते है कि लोग मुझे राम का गुलाम कहते है मै खुद को भी राम का गुलाम मानता हूँ परंतु मुझे लगता है कि खुद को राम का गुलाम कहने से भी मै राम का अपराधी बनता हूँ ।

जागु जागु.....जैसे घनदामिनी

तुलसी जी लिखते है कि हे मनुष्य तूँ इतना मूर्ख क्यू है जो इस संसार मे रहकर उस परमात्मा का भजन नही करता तूँ वैसे जागृत रह जिस प्रकार रात हमेशा जागती रहती हैं। तेरा शरीर वैसे ही क्षणभंगुर है जैसे बादलों के बीच बिजली थोडे समय के लिए विद्यमान रहती है

तू दयालु दीन.....हारी

हे राम तुम दयालु हो और मैं पापों का भंडार हूँ मै एक प्रसिद्ध पापी हूँ और आप पापों का संहार करने वाले हैं

नाथ तूँ.....तोसो

तुलसी जी कहते है कि हे प्रभु आप नाथ है मै अनाथ हूँ।मेरे समान दुखी इस संसार मे कोई नही है और आप जैसा दुखो का निवारण करने वाला कोई नही है

- तात-मात.....जो भावे

- हे प्रभु राम आप ही मेरे पिता, माता, गुरु व मित्र है।आपके और मेरे नाते अनेक है इसलिए हे प्रभु आपको जो भी
- नाता अच्छा लगता है उसे अपना लो

-
- और काहि.....दरिद्र

- ऐसे कौन से प्रभु है जो मेरी माँगो का निवारण करदे भाव मुझे संतुष्टि प्रदान करे ताकि फिर मै कभी न माँगू।

सुसमय.....निवाजै

- अच्छे समय तो सबके द्वार पर दान दिया जाता है परंतु राजा दशरथ का दरबार ही ऐसा हैं यहाँ बुरे समय भी गरीबों को दिया जाता हैं

-
- सेवा बिनु.....पाये

प्रभु राम सेवा विहीन एवं बिना गुण वाले भक्तो को भी इस संसार रूपी भवसागर से पार उतार देते है प्रभु राम के दरबार से सभी फूले फले भाव झोलियाँ भरके ले जाते हैं

जाउँ कहाँ....दीन पियारे

-
- तुलसी जी कहते है कि हे प्रभु राम आपके चरणो को छोडकर कहा जाऊ।और कौन से प्रभु है जो पापियो को संसार रूपी भवसागर से पार उतारने वाले हैं

कौने देव.....सुर तारे

- तुलसी कहते है कि कौन से प्रभु ऐसे है जो अपने पापी भक्त को भी हठ करके इस संसार रूपी भवसागर से पार उतारते है।प्रभु राम जी पक्षी जटायु ,ब्याद ऋषि,अहिल्या ,कई जड़ चेतन को पार उतारने वाले है।

जो मोहि.....सब सीठे

- तुलसी अपना भक्ति भाव प्रस्तुत करते लिखते है कि मुझे राम नाम की भक्ति बहुत मीठी लगती है।इस भक्ति के सामने मुझे नौ रस और अन्य छ: रस सब प्रकार का संसारिक रस फीका लगता है।

जाके प्रिय.... सनेही

- तुलसी कहते है कि जिसे श्री राम-सीता जी प्रिय नही है ऐसे व्यक्ति को करोडों शत्रुओं के समान मानना चाहिए

तज्यो....मंगलकारी

- प्रहलाद ने अपने पिता का त्याग कर दिया,विभीषण ने अपने भाई का त्याग किया और भरत ने अपनी माता का त्याग कर दिया।बलि ने अपने गुरु का,गोपियों ने अपने पतियो का त्याग कर दिया भाव प्रभु प्राप्ति के मार्ग मे बाधक सबका त्याग कर दिया।

तुलसी दास की विनयपत्रिका की कुछ अन्य विशेषताएं

राम के प्रति अन्नय भक्ति भावना:-

विनय की भावना:-

दीनता का भाव:-

- राम जी का भक्त के प्रति प्रेम

संसार की नश्वरता का वर्णन:-

श्री राम की सत्यता का चित्रण:-

श्री राम की दयालुता का चित्रण:-

संसारिक विषय विकारो का नाश:-

नाम-जाप पर बल:-

विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन:-

उत्कृष्ट व सुंदर भाषा:-

निष्कर्षत:

तुलसी की विनयपत्रिका हिंदी साहित्य की उत्कृष्ट रचना है